

शुद्ध अंतर्मन द्वारा जीवन सफल...

हम सभी की यही चाहना रहती है कि हमारा जीवन संपत्तिवान हो। बाहर की समृद्धि ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य हो, तो मनुष्य बाहर से समृद्ध है, लेकिन अंदर से तो खाली ही है। टैगोर ने कहा है, 'अंतर्मन विकसित करो' की भावना चरितार्थ नहीं। शिक्षा की यह नींव है 'अंदर से बाहर की ओर विकास', 'बाहर से अंदर की ओर विकास नहीं'। जीवन में आंतरिक सौन्दर्य का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। युवक भले ही फैशन



- ब्र. कु. गंगाधर

और सौन्दर्य को महत्व दें, लेकिन हृदय की विशालता, परिवार और समाज में कल्याण की भावना, आत्म नियंत्रण आदि को महत्व दे तो ही 'सत्यम शिवम सुंदरम' की भावना साकार हो सकती है।

'जीवन में सफलता का मानक' विषय पर 'रहस्य सफलता का' में मुनि राकेश ने चार प्रतिक्रमक लघुकथाओं का जिक्र किया है जो प्रेरणादायक हैं।

पहली प्रसंग कथा में -

एक आदमी जंगल में जा रहा था। उसे रास्ते में चार स्त्रियाँ मिली। उस व्यक्ति ने पहली स्त्री से पूछा: 'बहन, आपका नाम क्या है?' स्त्री ने कहा: 'मेरा नाम है बुद्धि'। 'आपका निवास स्थान?' उस आदमी ने पूछा। 'मैं मनुष्य के दिमाग में रहती हूँ' - पहली स्त्री ने जवाब दिया।

उसके बाद उस व्यक्ति ने दूसरी स्त्री से प्रश्न किया: 'आपका नाम?' 'मेरा नाम है लज्जा (शर्म)'। 'आप कहाँ रहते हैं?' - 'मैं मनुष्य की आँखों में रहती हूँ'।

अब तीसरी स्त्री से उस आदमी ने पूछा: 'आपका नाम क्या है?' 'मेरा नाम है हिम्मत'। 'आप कहाँ रहती हैं?' 'मनुष्य के हृदय में'।

अब चौथी स्त्री से उस आदमी ने पूछा: 'आपका नाम?' 'मेरा नाम है तंदुरुस्ती'। 'आप कहाँ रहती हैं?' 'मैं मनुष्य के पेट में रहती हूँ'।

उस व्यक्ति ने चारों, बुद्धि, लज्जा, हिम्मत और तंदुरुस्ती नाम की स्त्रियों की बात सुन ली और वो वहाँ से आगे बढ़ा।

जंगल में चार पुरुष मिले:

पहले पुरुष से उस आदमी ने प्रश्न किया: 'आपका नाम?' 'मेरा नाम है क्रोध'। 'आप कहाँ रहते हो?' 'मैं मनुष्य के दिमाग में रहता हूँ'। 'लेकिन दिमाग में तो बुद्धि भी रहती है, आप वहाँ कैसे रह सकते हो?' क्रोध ने कहा: 'जब मैं मनुष्य के दिमाग में होता हूँ तब बुद्धि वहाँ से विदा हो जाती है'।

उस आदमी ने दूसरे पुरुष से पूछा: 'आपका परिचय?' 'मेरा नाम है लोभ'। 'कहाँ रहते हो आप?' 'मनुष्यों की आँखों में'। 'मनुष्य की आँखों में तो लज्जा रहती है, आप वहाँ कैसे रह सकते हो?' - मनुष्य असमंजस में पड़ गया। लोभ ने कहा: 'जहाँ मेरा आगमन होता है, लज्जा वहाँ से चली जाती है'।

अब उसने तीसरे पुरुष से पूछा: 'आपका नाम?' 'मेरा नाम भय है'। 'कहाँ रहते हो आप?' 'मैं मनुष्य के हृदय में ही रहता हूँ'। 'मनुष्य के दिल में तो हिम्मत रहती है, आप कैसे रह सकते हो?' 'मैं (भय) जब आता हूँ, तब हिम्मत पलायन हो जाती है'।

अब उस आदमी ने चौथे पुरुष से पूछा: 'आपका नाम बतायेंगे?' 'मेरा नाम है रोग'। 'कहाँ है आपका निवास स्थान?' 'मेरा निवास स्थान है मनुष्य का पेट'। 'लेकिन पेट में तो तंदुरुस्ती रहती है, आप वहाँ कैसे रह सकते हो?' 'जब मैं (रोग) रहता हूँ तब तंदुरुस्ती वहाँ से भाग जाती है'।

भावार्थ यह है कि मनुष्य को गुणों का विकास और अवगुणों का परित्याग करना सीखना चाहिए। जीवन में जो वस्तु बंधनरूप है, उसे साहसपूर्वक निकालकर फेंकना सीखो। मन ही उत्थान, पतन तथा सुख-दुःख का कारण है। मन रूपी घोड़े को सही दिशा में मोड़ना सीखो। 'सफल' शब्द का अर्थ है- 'फलदायक' मतलब कि जैसा चाहा वैसा - शेष पेज 8 पर

नुमाशाम को योग सारी प्राप्तियों का आधार

यहाँ शान्तिवन में आप सबको ऐसी कौनसी आकर्षण लेकर आती है? इसका नाम शान्तिवन क्यों पड़ा है? बाबा यहाँ आते ही शान्ति, शक्ति और प्रेम की वर्षा कर देता है। ऐसी फीलिंग आती है ना! भासना आती है ना! कहाँ कहाँ से खींचके यहाँ हाज़िर होना, क्या मिलता है यहाँ? मैं आत्मा हूँ, देह से न्यारी हूँ, और ऊपर वाले सर्वशक्तिवान बाप की सन्तान हूँ। बाबा हम बच्चों को क्या से क्या बना रहा है। प्यारा बाबा, मीठा बाबा, शुक्रिया बाबा।

संगमयुग की थोड़ी-सी यह घड़ियां बहुत अच्छी हैं। शिवबाबा ने ब्रह्मा तन में आ करके ब्रह्मा मुख से ज्ञान सुनाया और हमारे मुख में ब्रह्माभोजन खिलाया है। कोई भी संस्था में ऐसा नहीं होगा कि तीनों टाइम ताज़ा भोजन, चाय, टोली मिले, वो भी मुफ्त में। बाकी हम क्या करते हैं? भोजन तो मिलता है, फिर सुनने के लिए बाबा की मुरली सुनते हैं। एक एक मुरली में बाबा कितनी सारी अच्छी-अच्छी बातें सुनाता है, वो सब सुनते कितना मज़ा आता है। गीत भी है ना बाबा, मुरली, मधुबन यह गीत सुनते भी मन खुशी में झूम उठता है। यह भी वन्दर है जो सारे विश्व भर में आज के डेट की मुरली जो यहाँ सुनाई वही मुरली उसी दिन सारे विश्व में सभी जगह सुनाई जायेगी। यह सिस्टम बड़ी वन्दरफुल है। यह बाबा की कमाल है या मधुबन वालों की, बाबा कहते हैं बच्चे तुम्हारे कदम कदम

में कमाई है। तुम जहाँ भी कदम रखेंगे वहाँ पदमों की कमाई है। पदम माना पैसा नहीं, लेकिन ज्ञान रत्नों से बाबा हमारी झोली भर देता है।

बाबा की दृष्टि महासुखकारी है, अति सुख मिलता है। दुःख का नाम-निशान नहीं। जब मम्मा ने देह का त्याग किया तो बाबा ने कहा तुम मम्मा की खटिया पर सो जाओ। वहाँ मैं याद में बैठी थी तो मुझे नशा चढ़ा हुआ था। तो बाबा अचानक सामने आया और पूछा कि बच्ची क्या कर रही हो? फिर बाबा अपने कमरे में ले गया, खाना खिलाया और कहा चलो क्लास में। तो रात्रि क्लास में बाबा मुझे पूछता है, कभी तुम दुःख तो नहीं करती हो? तो मैंने मुस्कराया, बाबा की ऐसी मेहरबानी है जो मुझे कभी दुःख होता ही नहीं है इसलिए मैंने कहा बाबा मैं कभी किसी को न दुःख देती हूँ, न लेती हूँ।

शाम के समय संगठन में योग करना फिर बाबा की बातों को रिवाइज़ करना, क्योंकि बाबा पालना तो देता है पर पढ़ाई में बच्चों का ध्यान रहे। पढ़ाई में कमाई है। और यह वन्दर है वहाँ पढ़ाई के बाद कमाई है, यहाँ हमारी पढ़ाई में ही कमाई है। सारे विश्व की सेवा कराने के बाबा ने निमित्त बनाया पर मैंने पर्स हाथ में नहीं उठाई। 5 पाऊण्ड हाथ में नहीं, 5 रूपया भी नहीं है, क्योंकि कमाई हो रही है ना, पढ़ाई में कमाई है ना। किसको ऐसी फीलिंग है कि पढ़ाई में ही हमारी कमाई

है? यह बहुत अच्छी कमाई है।

संगठन में सहयोगी बनना बनाना बड़ी अच्छी सेवा है।

बिन्दी लगाना माना जो बीता ड्रामा। ड्रामा में हरेक का पार्ट अपना है। दो एक जैसे नहीं हैं। तो मुझे क्यों, क्या, कैसे यह काँ काँ नहीं अच्छा लगता है। सब अच्छा

ही होगा, जो हुआ सो अच्छा। अभी अच्छा होगा तो भविष्य में भी, कल भी अच्छा ही होगा, यह गैरंटी है। यह

मेरे स्वाभाविक संस्कार में आ गया है - जो हुआ सो अच्छा। क्यों हुआ? वेस्ट ऑफ टाइम। टाइम को सफल करना है क्योंकि यह समय बड़ा वैल्युबुल है। यह समय

वन्दरफुल है इसलिए कभी अमृतवेले मिस नहीं करेंगे, ज़रूर बाबा के सामने बैठेंगे। फिर दिन भर में जो कर्मों की गुह्यगति बाबा

ने बताई है, मुक्ति जीवनमुक्ति वर्से में दी है, अभी पास्ट में जो भी कुछ भूलें हो गयी थी उससे मुक्ति हो गयी। बाबा कहता है अब मनमनाभव, मध्याजीभव। ऐसा कर्म करना

है जो सतयुग में लक्ष्मी नारायण का राज्य हो, हम उनके राज्य में पहले पहले आये इसलिए यह कमाई का टाइम है, पालना,

पढ़ाई, प्राप्ति बहुत अच्छी है।



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

मन को सदा बिज़ी रखो तो कंट्रोलिंग पावर आ जायेगी



दादी हृदयमोहिनी
अति. मुख्य प्रशासिका

अमृतवेले और नुमाशाम के समय बाबा से बातें करने के लिए पर्सनल टाइम मिलता है।

भले संगठन में बैठे हैं, लेकिन हरेक की रुचि होती है, हर एक अपने-अपने अनुसार बाबा से बातें करता है। किसको निराकारी रूप की अनुभूति ज़्यादा आती है, किसी को आकारी रूप की ज़्यादा आती है, तो जो चाहिए, मतलब अपने आपको उसमें अनुभव करते रहेंगे, यह टाइम हमारा ऐसा है। टाइम को भी व्यर्थ नहीं गंवाना, सफल करना है। वो बाबा बताते ही रहते हैं, बाबा ने विचार सागर मंथन करना भी सिखलाया है, बाबा से बातें करने का टाइम भी अच्छा है। पर्सनल अपनी कोई भी समस्या है तो उसको बाबा को देना और जवाब लेना। ऐसे काफी टाइम हमको बीच-बीच में मिलता है जो हम कर सकते हैं। मतलब फालतू और बातें नहीं सोचो। जो अपने पुरुषार्थ की बातें हैं, उसमें ही रहने का सोचो। कोई भी बात दिल में है या पुरुषार्थ के लिए कुछ शक्ति चाहिए, वो

भी बाबा को सुनाकर शक्ति ले सकते हैं, बातें भी कर सकते हैं। यह शाम का टाइम अपने लिए फ्री है, जिस भी रूप से बाबा से मिलो। बाबा से रूहरिहान भी कर सकते हैं। हमारा तो मन का ही पुरुषार्थ है और बाबा ने रूहरूहान की बातें भी बहुत सुनाई हैं। तो अगर अकेले होते हो तो क्या रूहरूहान बाबा से करो या अपने आपसे करो, वो भी बाबा ने बतला दिया है। मतलब अपने को बिज़ी रखो, खाली दिमाग फिर पता नहीं कहाँ कहाँ जाता है। दिमाग कंट्रोल में ज़रूर हो। अपने आप भी अपने को प्रोग्राम देना, यह भी आदत ज़रूरी है। जब शुरू में बाबा में बाबा आया था, उस समय बाबा ऐसी मस्ती में मस्त रहता था, बातें करने में जो देखते ही लगता था, बाबा बहुत डीप बाबा से रूहरिहान कर रहा है। तो आप भी अपने मन को ऐसे बिज़ी रखो। हमारे टॉपिक्स कितनी निकली हैं, कोई भाषण ही तैयार करो, किसी भी टॉपिक पर लिखो तो उसमें भी कितना टाइम लग जाता है। बिज़ी हो जायेंगे। एक ही बात सोचो, बस बाबा की महिमा करते रहो, वो भी एक ही बात के ऊपर नहीं सोचना, वैराइटी में मज़ा

आता है। वैराइटी करने में अच्छा है। मतलब मन को कंट्रोल में रखो, ऐसे नहीं टाइम चला गया, सोचा नहीं... ऐसे मन में कुछ सोच तो चलता ही है, लेकिन कायदेमुजीब नहीं, इसलिए अपने मन को कंट्रोल में ज़रूर रखना। यह कंट्रोलिंग पावर हमको नई नई इन्वेन्शन निकालने में मदद करती है क्योंकि मन को काम तो चाहिए ना, खाली मन भी तो ठीक नहीं है ना! तो भिन्न-भिन्न अनुभव हों। लक्ष्य रखने से फर्क पड़ता है, मन को कंट्रोल में रखना, जैसे चाहें वैसे चले। तो यहाँ यह टाइम बहुत अच्छा है। बाबा की मुरली इतनी चलती है, तीन पेज, चार पेज उस पर ही मनन करो तो भी बहुत अच्छा है। मन बुद्धि को बिज़ी ज़रूर रखो, ऐसे नहीं बस बैठे हैं, कुछ न कुछ ज़रूर चलेगा। तो कंट्रोलिंग पावर भी हो जो मैं सोचू वही चले। जितना समय चाहें उतना समय ही सोचें, मन अपने कंट्रोल में हो। पहले ऐसे ग्रुप ग्रुप बनाके करते थे, अभी भी ऐसा करके देखो। मन जो है उसको बिज़ी रखने का अपने आपका ही प्रोग्राम बनाओ।